International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 04-04-2022, Accepted: 20-04-2022, Published: 05-05-2022
Volume 8, Issue 3, 2022, Page No. 1-6

मथुरा जनपद में तुलसी की कृषि का विकासः भौगोलिक अध्ययन

मधु यादव[1], कोमल सिंह[2]
[1] एसोसिएट प्रोफेसर (भूगोल), ए.के. कॉलेज, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] भूगोल विभाग, श्री गुरू माधवानन्द (पी0जी0) कॉलेज रूपवास, भरतपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
कृषि मानव का एक प्राचीनतम व्यवसाय हैं यह भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ हड्डी मानी जाती हैं। आज भारत मे खाद्यान्न फसलों, चारा फसलों, तिलहन एवं पेय फसलों के अलावा औषधीय फसलें भी होने लगी हैं उन्हीं फसलों में से एक हैं। तुलसी की कृषि। तुलसी एक औषधिय पौधा होने के साथ साथ हिन्दुओं का आध्यात्मिक पौधा भी हैं। इसकी कृषि के साथ साथ इस पौधे को लोग घर में लगाते हैं और पूजा करते हैं वर्तमान में भारत के अधिकतर राज्यों में तुलसी की कृषि होती हैं उत्तर प्रदेश के लखनऊ, कन्नोज, मथुरा और हाथरस आदि जनपदों में तुलसी हो रही हैं। अतः तुलसी का जड़ तना पत्तियां, डाली व बीज आदि सभी काम मे आते हैं इस शोध में प्राथमिक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है मथुरा जनपद में तुलसी के पूर्व समय में वन हुआ करते थे। इसका वर्तमान जीता जागता उदाहरण वृंदावन का निधि वन हैं भारतीय संस्कृति के चिर पुरातन ग्रंथ वेदों (अथर्ववेद 1–24) मैं भी तुलसी के गुणों एवं उपयोगिता का वर्णन मिलता हैं। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हैं कि अध्ययन क्षेत्र मैं लिए गए सर्वेक्षण मैं समस्या कृषकों द्वारा बताई गई हैं उनके निराकरण के लिए सुझाव उपयोगी व लाभकारी होंगे

मूल शब्दः अर्थव्यवस्था, औषधीय, आध्यात्मिक, सर्वेक्षण

प्रस्तावना
कृषि मानव का एक प्राचीनतम् उद्यम है। यह अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी मानी गयी है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि न केवल आर्थिक विकास बल्कि सामाजिक जीवन का भी सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है, देश में अधिकांश जनसंख्या के लगभग सभी पक्षों को प्रभावित करती है। भारत में खाद्यान्य, तिलहन, व्यापारिक, पेय पदार्थ एवं औषधीय कृषि फसलें उत्पादित की जाती हैं। इनमें से आज एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण औषधीय कृषि फसल तुलसी का उत्पादन क्षेत्र अधिक बढ़ रहा है।
तुलसी– (ऑसीमम सैक्टम) एक द्विबीज पत्री तथा शाकीय औषधीय पौधा है। यह झाड़ी के रूप में उगता है, और 1 से 3 फुट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ बैंगनी आभा वाली हल्के रोएं से ढकी होती है। पत्तियाँ 1 से 2 इंच लम्बी सुगंधित और अंडाकार या आयताकार होती है। पुष्प मंजरी अति कोमल एवं 8 इंच लम्बी और बहुरंगी छटाओं वाली होती है, जिस पर बैंगनी और गुलाबी आभा वाले बहुत छोटे हृदयाकार पुष्प चक्रों में लगते हैं। बीज चपटे पीतवर्ण के छोटे काले चिन्हों से युक्त अण्डाकार होते हैं। औषधीय गुणों के लिए सालों से इस्तोल की जा रही तुलसी की औद्योगिक जगत में भारी माँग है। इसलिए तुलसी की व्यवसायिक स्तर पर काफी खेती की जा रही है। वर्तमान में भारत के अधिकतर राज्य तुलसी की कृषि कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश के लखनऊ, कन्नौज, मथुरा और हाथरस आदि जनपदों में तुलसी के कृषि क्षेत्रों में वृद्धि हो रही है।

चित्र 1

शोध अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र ''मथुरा में तुलसी की कृषि का विकास : भौगोलिक अध्ययन'' में उपयुक्त दशाओं में आंकने का प्रयास किया गया है। मथुरा जनपद धार्मिक एवं बढ़ते तापमान और वर्षा की कमी ने तुलसी की कृषि को जन्म दिया है। तुलसी एक धार्मिक तथा औषधीय पौधा है, यह जनपद के प्रत्येक हिन्दू घरों में पाया जाता है मन्दिरों में तो यह धार्मिक अनुष्ठान हेतु अधिक मात्रा में पैदा किया जाता है। मथुरा में इसकी कृषि बहुत प्राचीन समय से होती रही है। वृन्दावन तुलसी के पर्यायवाची शब्द 'वृन्दा' के नाम पर पड़ा है। वृन्दावन को तुलसी के वनों की संज्ञा दी गयी है। इसलिए कहा जा सकता है महाभारत काल में मथुरा (शूरशेन नगरी) में तुलसी के वन हुआ करते थे और प्राचीन काल में भी तुलसी का प्रयोग धार्मिक प्रयोजन एवं चिकित्सा हेतु करते थे। तुलसी की कृषि वृन्दावन के निकट जैंत गाँव में लगभग 40–45 वर्ष पूर्व से की जा रही है। वर्तमान में तुलसी की बढ़ती हुई माँग एवं वर्षा की कमी के कारण मथुरा जनपद के अनेक गाँवों में तुलसी की कृषि की जा रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र सम्पूर्ण मथुरा जनपद है। तुलसी की कृषि के विकास को ध्यान में रखकर इसका चयन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में तुलसी की पैदावार, तुलसी के महत्त्व, प्रजातियाँ, उगाने की विधि, तुलसी का प्रयोग एवं तुलसी की खेती में आने वाली समस्याओं से अवगत करना है तथा इसकी उपयोगिता से अवगत कराना है और जनता को तुलसी की कृषि के लिए जागरूक करना है।

मथुरा जनपद की भौगोलिक स्थिति

मथुरा जनपद आगरा मण्डल की उत्तरावर्ती पावन स्थली बृज भूमि के नाम से जाना जाता है। जहाँ लोक नायक कर्मयोगी भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। मथुरा जनपद $27^0 14'$ उत्तरी अक्षांश से $27^0 58'$ उत्तरी अक्षांश तक तथा $77^0 17'$ पूर्वी देशान्तर से $78^0 12'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य फैला है। जनपद की उत्तरी सीमा हरियाणा राज्य के जनपद पलवल व उत्तर–पूर्वी सीमा पर जनपद अलीगढ़, पूर्वी सीमा जनपद हाथरस, दक्षिणी सीमा जनपद आगरा तथा पश्चिमी सीमा राजस्थान राज्य की जनपद भरतपुर से लगी हुई है।

चित्र 2

मथुरा जनपद का क्षेत्रफल 3340 वर्ग किमी है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 25.47 लाख है। साक्षरता दर 70.36 प्रतिशत है। इसमें पुरूषों की साक्षरता 81.97 प्रतिशत एवं महिलाओं की साक्षरता 56.89 प्रतिशत है। मथुरा जनपद में 4 तहसील, 10 विकासखण्ड, 730 आवाद गाँव और 150 गैर आबाद गाँव है। जनपद में कुल 880 गाँ है। मथुरा जनपद के लगभग मध्य में उत्तर से दक्षिण दिशा में यमुना नदी बहती है। जनपद का मुख्यालय मथुरा नगर यमुना नदी के दाहिने किनारे पर वसा है, जो कि रेल मार्ग एवं सड़क मार्गो द्वारा देश के अन्य क्षेत्रों से जुड़ा है।

शोध पत्र का विधि तन्त्र एवं आंकड़ों के स्रोतः वर्तमान शोध अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। शोध पत्र के अध्ययन क्षेत्र मथुरा जनपद की तुलसी की कृषि को लक्ष्य किया गया है। तुलसी की कृषि का मूल्यांकन व विश्लेषण गाँव स्तर पर किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों का संकलन अनुसूची के माध्यम से किया गया है, और तुलसी की फसल व व्यवसाय के सम्बन्ध में ग्रामीण लोगों से साक्षात्कार द्वारा जानकारियाँ प्राप्त की गयी है तथा ग्रामीण किसान के अनुभवों को संग्रहित करने का प्रयास किया गया है तथा इनके प्रदर्शन हेतु दण्ड आरेख एवं मानचित्र की सहायता ली गयी है।

मथुरा जनपद में वर्तमान में तुलसी की कृषि की संरचना एवं भौतिक स्थितिः तुलसी एक औषधीय पौधा है व हिन्दू धर्म में इसकी पूजा की जाती है। मथुरा जनपद में तुलसी के पूर्व समय में वन हुआ करते थे। इसका वर्ममान में जीता जागता उदाहरण ''वृन्दावन का निधि वन'' है। यहाँ तुलसी की बहुत बड़ी बड़ी झाड़ियाँ है। मथुरा में प्रत्येक मन्दिर में तुलसी के बागान पाये जाते हैं। तुलसी अधिकतर हिन्दू अपने घर के आगन में लगाते हैं एवं और हिन्दू महिला–पुरूष इसकी पूजा–अर्चना करते हैं। मथुरा जनपद में तुलसी की कृषि की जाने लगी है और इसका उपयोग व्यवसायी कृषि के रूप में हो रहा है। वर्तमान में मथुरा जनपद में तुलसी की कृषि का विस्तार वृन्दावन के आस–पास के गाँव में हुआ है– जैंत, चौमुहाँ, तरौली, सेही, आजई, नौगांव, इगरारा, पैगांव तथा पारसौली आदि गाँव में तुलसी की कृषि की जा रही है।

तालिका 1: मथुरा जनपद में तुलसी की कृषि का क्षेत्र वर्ष–2015

गाँव का नाम	कृषि क्षेत्र (वीघा में)
जैंत	105
आजई	40
चौमुहां	20
तरौली	15
नौ गांव	13
इगरारा	04
सैंई	08
पैगांव	05
पारसौली	10
मन्दिरों में	05
येाग	225

स्त्रोतः व्यक्तिगत तुलसी की कृषि का सर्वेक्षण 2015

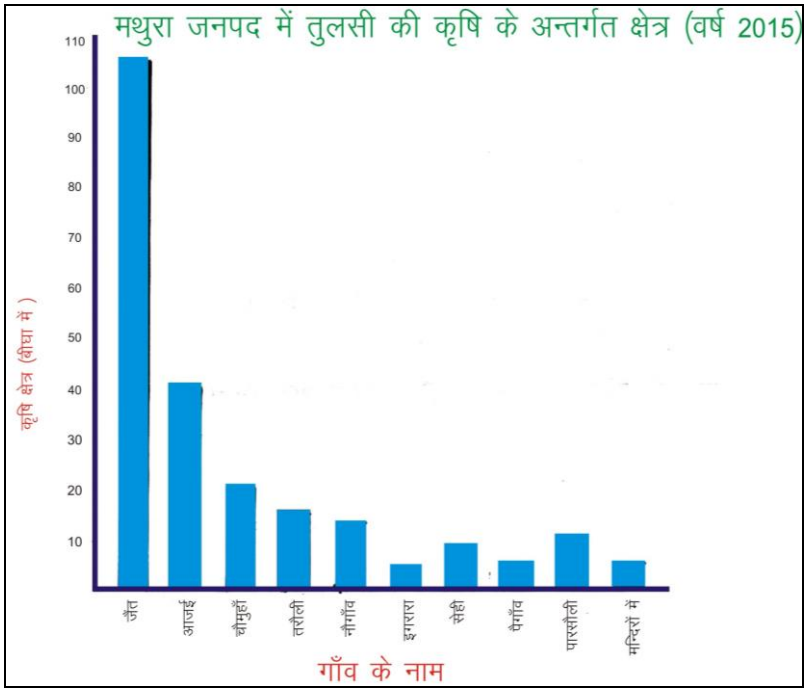

चित्र 3

जैंत गाँव में तुलसी के किसानों से साक्षात्कार करने के बाद में ज्ञात हुआ है कि जैंत में तुलसी की कृषि लगभग 40–45 वर्ष पूर्व से हो रही है। इस गाँव में वर्तमान में 105 बीघा भूमि पर तुलसी की कृषि की जा रही है। गाँव में तुलसी की लकड़ी द्वारा घर–घर में कण्ठीमाला की कटाई एवं पुवाई का काम होता है। यहां से कण्ठीमाला कुटीर उद्योग का प्रचार–प्रसार आस–पास के क्षेत्रों में हुआ है।
चौमुहाँ गाँव में 20 बीघा भूमि पर, तरौली गाँव में 15 बीघा भूमि पर, नौगाँव में 13 बीघा, इगरारा में 4 बीघा, सैंही में 8 बीघा, पैगाँव में 5 बीघा तथा पारसौली गाँव में 10 बीघा भूमि पर तुलसी की कृषि की गयी है। मन्दिरों में– मथुरा में विश्व प्रसिद्ध मन्दिर श्रीकृष्ण जन्मभूमि, मधुवन, निधिवन , रमणरेती एवं वृन्दावन और अन्य मन्दिरों में तुलसी के अलग से बागान है। इस तुलसी का उपयोग भोग–प्रसाद के रूप में किया जाता है इस प्रकार मथुरा जनपद के अनेक मन्दिरों में तुलसी के अपने निजी बागान है।

तुलसी की प्रजातियाँः तुलसी की सामान्यतः निम्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं–

1. ओंसीमम अमेरिकन (काली तुलसी) गभीरा या मामरी।
2. ओंसीमम वेसिलिकम (मरूआ तुलसी) मुन्जरिकी या मुरसा।
3. ओंसीमम वेसिलिकम मिनिमम
4. ओंसीमम ग्रटिसिकम (राम तुलसी/वन तुलसी/अरण्य तुलसी)
5. ओंसीमम सैक्टम
6. ओसीमम किलिमण्डचेरिकम (कर्पूर तुलसी)
7. ओसीमम विरिडी

इनमें ओसीमम सैक्टम को प्रधान या पवित्र तुलसी माना गया है। इसकी भी दो प्रधान प्रजातियाँ है। 1– श्री तुलसी जिसकी पत्तियाँ हरी होती हैं। 2– कृष्ण तुलसी जिसकी पत्तियाँ निलाभ कुछ बैंगनी रंग लिए होती है। गुण, धर्म की दृष्टि से काली तुलसी को ही श्रेष्ठ माना गया है, परन्तु अधिकांश विद्वानों का मत है कि दोनों ही गुणों में समान है। तुलसी का पौधा हिन्दू धर्म में पवित्र माना जाता है।

तुलसी की कृषि उगाने की विधि

तुलसी के बीज को एक निश्चित तापमान में मई में बुआईकर पौधा तैयार किया जाता है। पौधों में 4–5 पत्तियाँ आने पर उसे जड़ सहित उखाड़कर तैयार खेत में एक–एक फुट की दूरी पर लगा दिया जाता है। पौध को उखाड़ते समय यह ध्यान देने की जरूरत है कि उसकी जड़े न कटें। तुलसी की पौध जून के अन्त व जुलाई के प्रारम्भ (अषाढ़ मास) में लगाई जाती है। इसके बढ़ते समय निराई–गुड़ाई की जाती है और वर्षा के अभाव में सिंचाई भी की जाती है। तुलसी की फसल 90 दिनों में तैयार हो जाती है और फिर उसे काटने की बजाय उखाड़ा जाता है और बीज व पत्तों को झारते है। कभी–कभी पकते समय तेज हवा चलने से तुलसी का बीज खेत में ही झड़ जाता है।

उर्वरकों का प्रयोग

पौधा बढ़ते समय मिट्टी से सभी पोषक तत्त्वों को सोख लेता है। इसलिए नाइट्रोजन पोषित खाद, समय–समय पर खेतों में डालते रहना चाहिए। इसके अलावा कम्पोस्ट खाद का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। खाद की कमी में पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं जो कि कुपोषण का लक्षण है। खाद डालते समय भी इस बात का ध्यान रखना होता है कि खाद ज्यादा न हो जाए। इसके लिए किसानों को नियम से खाद डालना चाहिए।

तुलसी की खेती में आने वाली समस्याएः तुलसी की खेती में निम्नलिखित समस्यायें आती हैं –

- **तुलसी की खेती के लिए प्रशिक्षण की समस्याः** तुलसी की कृषि के लिए किसानों को किसी प्रकार का कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है। प्रशिक्षण के अभाव में तुलसी की कृषि में पूर्ण रूपेण वृद्धि नहीं हो सकी है।
- **नई तकनीक का अभावः** तुलसी की वृद्धि परम्परागत तरीके से की जाती है। इसमें किसी नवीन तकनीक का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- **वर्षा की अनियमिताः** तुलसी वर्षा के मौसम में उत्पन्न होती है, लेकिन वर्तमान में वर्षा अनियमित रहती है तो पानी का अभाव उत्पन्न होता है। इससे सिंचाई की समस्या उत्पन्न होती है।
- **बीजों की समस्याः** तुलसी का हरेक किसी बीज वाले की दुकान पर नहीं मिलता है बीज के लिए इधर–उधर भटकना पड़ता है।
- **विपणन की समस्याः** तुलसी को बेचने के लिए कोई निश्चित बाजार व स्थानीय विपणन केन्द्र नहीं है, इसलिए तुलसी का सही मूल्य नहीं मिल पाता है।
- **पानी की अधिकता की समस्याः** पत्तों के सिरे और बीच का भाग भूरा–काला होना, जड़ों के सड़ने और कमजोर होने से पौधों का मुर्झाना पानी की अधिकता के लक्षण है, जिसे आमतौर पर लोग पानी की कमी समझ लेते है।
- **पौधों के पीला होने की समस्याः** कभी–कभी पत्तियों के निचले भाग की नसों में सफेद दाने आ जाते हैं। यह असल में मकड़ी के छोटे अण्डे होते हैं। अनदेखी करने पर यह पूरी फसल में फैल जाते हैं।
- **फंगस होने की समस्यः** पत्तियों के ऊपर जाले जैसी सफेद परत दिखाई दे तो वह फफूंद का लक्षण है।
- **रख–रखाव की समस्याः** तुलसी झाड़ीनुमा होने के कारण अधिक स्थान घेरती है और इसे धूप में सुखाने से काली पड़ जाती है। इसलिए इसको छाया में सुखाने की समस्या बनी रहती है।

- **कुशल श्रमिकों की आवश्यकताः** तुलसी की रोपाई, निराई, गुड़ाई, उखड़ाई, झराई एवं छटाई के लिए श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है इस प्रकार हर समय मजदूरों की समस्या बनी रहती है।

जनपद में तुसली का महत्त्वः तुलसी निम्नलिखित कारणों से महत्त्वपूर्ण है–

तुलसी का औषधीय महत्त्वः भारतीय संस्कृति के चिर पुरातन ग्रंथ वेदों (अथर्व वेद 1–24) में भी तुलसी के गुणों एवं उपयोगिता का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त ऐलोपैथी, आयुर्वेदिक और यूनानी दवाओं में तुलसी का किसी न किसी रूप में प्रयोग किया जाता है, तुलसी एक रामबाण औषधि है। यह प्रकृति की अनूठी देन है। इसकी जड़, तना, पत्तियाँ, डालियाँ तथा बीज सभी उपयोगी होते हैं। इसका उपयेाग सर्दी, जुकाम, खांसी, दंत रोग और श्वास सम्बन्धी रोगों के लिए बहुत ही फायदेमंद है। कुछ उपचारों हेतु तुलसी का तेल व जूस का भी उपयोग किया जाता है।

तुलसी का रोगों में उपयोग

1. खांसी अथवा गला बैठने पर तुलसी की जड़ सुपारी की तरह चूसा जाती है।
2. श्वांस रोगों में तुलसी के पत्ते काले नमक के साथ सुपारी की तरह मुँह में रखने से आराम मिलता है।
3. तुलसी की हरी पत्तियों को आग पर सेंक कर नमक के साथ खाने से खांसी तथा गला बैठना ठीक हो जाता है।
4. तुलसी के पत्तों के साथ 4 भुनी लौंग चबाने से खांसी चली जाती है।
5. तुलसी के कोमल पत्तों को चबाने से खांसी और नजले से राहत मिलती है।
6. खासी–जुकाम में तुलसी के पत्ते, अदरक और काली मिर्च से तैयार चाय पीने से तुरंत लाभ मिलता है।
7. 10–12 तुलसी के पत्ते तथा 8–10 काली मिर्च के चाय बनाकर पीने से खांसी जुकाम और बुखार ठीक होता है।
8. फेफड़ों में खरखराहट की आवाज आने व खांसी होने पर तुलसी की सूखी पत्तियाँ 4 ग्राम मिश्री के साथ लेने से राहत मिलती है।
9. काली तुलसी का स्वरस लगभग डेढ़ चम्मच काली मिर्च के साथ देने से खांसी का वेग एकदम शान्त होता है।
10. 10 ग्राम तुलसी के रस को 5 ग्राम शहद के साथ सेवन करने से हिचकी, अस्थमा एवं श्वांस रोगों को ठीक किया जा सकता है।
11. अदरक या सोंठ, तुलसी, कालीमिर्च एवं दालचीनी थोड़ा–थोड़ा सबको मिलाकर एक ग्लास पानी में उबालें, जब पानी आधा रह जाए तो शक्कर नमक मिलाकर पीने से फ्लू, खांसी, सर्दी तथा जुकाम ठीक होता है।
12. शहद, अदरक और तुलसी को मिलाकर बनाया गया काढ़ा पीने से दमा, कफ और सर्दी से राहत मिलती है।
13. नमक, लौंग और तुलसी के पत्तों से बनाया गया काढ़ा इंफ्लुएंजा/मौसमी बीमारी में फौरन राहत देता है। जब भी खांसी हो सेवन करें।
14. तुलसी व अदरक का रस एक एक चम्मच, शहद एक चम्मच, मुलेठी का चूर्ण एक चम्मच मिलाकर सुबह शाम चाटें, यह खांसी की अचूक दवा है।
15. तुलसी के पत्तों का रस, शहद, प्याज का रस और अदरक का रस सभी चाय का एक एक चममच भर लेकर मिला लें। इसे आवश्यकता के अनुसार दिन में तीन चार बार लें। इससे बलगम बाहर निकल जाता है और रेाग ठीक हो जाता है।
16. तुलसी दमा टीबी में अत्यंत लाभकारी है। तुलसी के नियमित सेवन से दमा, टीबी नहीं होती है क्योंकि यह बीमारी के जिम्मेदार कारक जीवाणु को बढ़ने से रोकती है। चरक संहिता में तुलसी को दमा की औषधि बताया गया है।
17. फ्लू रोग तुलसी के पत्तों का काढ़ा, सेंधा नमक मिलाकर पीने से ठीक होता है।
18. सभी कफ सीरप को बनाने में तुलसी का इस्तेमाल किया जाता है। तुलसी की पत्तियाँ कफ साफ करने में मदद करती हैं।
19. तुलसी के सूखे पत्ते न फेंके, ये कफ नाशक के रूप में काम में लिये जा सकते हैं।

आर्थिक महत्त्व

तुलसी की लकड़ी से कण्ठीमाला कुटीर उद्योग का जन्म हुआ है। इससे मथुरा जनपद एवं उसके आस–पास के क्षेत्रों में कण्ठीमाला उद्योग का विकास हुआ है। इसमें घर के बड़े बुजुर्ग, बच्चे, स्त्रियाँ एवं युवा सभी लोग कार्य करते रहते हैं। 1 कोरी (20 कण्ठमाला) 10 रूपए की बना के बेची जाती है। तुलसी का उपयोग इत्र, तेल एवं दवाओं में लिया जाता है।
तुलसी की कृषि में तुलसी की जड़, तना, पत्तियाँ डालियाँ तथा बीज सभी का व्यवसाय व उपयोग होता है। तुलसी की लकड़ी (जड़, तना एवं डाली) से कण्ठीमाला बनती है। इसके हरे पत्तों से जूस एवं मालाएं बनाई जाती हैं। सूखे पत्तों बीज का उपयोग दवाओं में किया जाता है व बीज से तेल भी निकाला जाता है। इन सभी को अलग अलग दामों पर बेचा जाता है। जड़ 100 रूपए किलो, तना 80 रूपए किलो, डालियाँ 60 रूपए किलो व महीन डाली 30 से 40 रूपए प्रति किलो के हिसाब से बिकती है। इसका बीज 600 रूपए किलो तथा सूखे पत्ते 8000 रूपए प्रति बीघा तथा हरे पत्ते 10000 रूपए बीघा सावन व भादों के महीने में डेढ़ माह के लिए दिये जाते हैं।
इसकी लकड़ी डींग, कामां, अलवर, हाथरस व मथुरा के लोग खरीदते है। इनसे कण्ठीमाला बनाते हैं। हरे पत्ते वृन्दावन के माली व अन्य व्यापारी खरीदते है तथा शेष लकड़ी, बीज व सूखे पत्ते मथुरा के व्यवसायी खरीदते हैं और इसका व्यापार दवाई कम्पनियां करती हैं। तुलसी, गुजरात, दिल्ली व नैनीताल के लिए भेजी जाती है।

धार्मिक महत्त्व

भारतीय संस्कृति में तुलसी को पूज्यनीय माना जाता है। तुलसी की प्रत्येक हिन्दू घर में पूजा की जाती है और तुलसी के हरे पत्तों का प्रयोग मन्दिरों में भोग–प्रसाद व फूल–माला के बीच में लगाने में किया जाता है।

प्राकृति महत्व

एक कहावत है कि जिस घर में तुलसी का पौधा लहराता हो वहाँ आकाशीय बिजली का प्रकोप नहीं होता। घर बनाते समय नींव में घड़े में हल्दी से रंगे कपड़े में तुलसी की जड़ रखने से उस घर पर आकाशीय बिजली गिरने का डर नहीं रहता। तुलसी का पौधा जहाँ लगा हो, वहाँ आस पास सांप विच्छू जैसे जहरीले जीव नहीं आते हैं।

तुलसी का पौधा दिन रात में ऑक्सीजन देता है। इससे प्रदूषण दूर करता है। तुलसी का वातावरण पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि प्रत्येक घर में एक तुलसी का पौधा अवश्य लगा हो।

मथुरा जनपद में तुलसी की कृषि के विकास हेतु सुझाव

1. किसानों को तकनीक से सलाह और प्रशिक्षण समय–समय पर देना चाहिए।
2. समय–समय पर तुलसी कृषि कैंपों एवं प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया जाना चाहिए।
3. किसानों को चुनिन्दा किस्मों की खेती की बारीकियाँ उनके प्रजनन रोपण का सही समय और तरीको, नर्सरी, खाद, प्रबंधन, बीमारियाँ और उनकी रोकथाम आदि के विषय में जानकारी दी जानी चाहिए।
4. तुलसी की कृषि में प्रयुक्त होने वाले उपकरण भी उपलब्ध कराये जाने चाहिए।
5. तुलसी में होने वाली बीमारियों के लिए उचित दवाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए।
6. वर्षा की कमी के समय सिंचाई की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए।
7. तुलसी के विपणन हेतु विपणन केन्द्रों की व्यवस्था की जानी चाहिए। इससे किसानेां को उचित मूल्य प्राप्त हो सकें।
8. तुलसी के रख–रखाव की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए।
9. तुलसी की कृषि में सही मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
10. तुलसी की वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए सरकार को योजनाएँ चलानी चाहिए।

निष्कर्ष

मथुरा जनपद के कृषि विकास में आज तुलसी (औषधीय) कृषि अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। संकलित विश्लेषण से यह पाया गया है कि जनपद में वर्तमान (2015) में 225 बीघा भूमि पर तुलसी की कृषि हो रही है। इस प्रकार उपरोक्त कृषि विकास के आधार पर कहा जा सकता है कि मथुरा जनपद में तुलसी की कृषि में निरन्तर वृद्धि हो रही है और तुलसी पर आधारित उद्योग कण्ठीमाला के विकास से लोगों को रोजगार मिला हैं।

अन्त में निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र में लिये गये सर्वेक्षण में जो समस्याएँ कृषकों द्वारा बताई गयी है उनके निराकरण के लिए उपरोक्त सुझाव उपयोगी व लाभकारी होगें। प्रस्तुत अध्ययन में तुलसी की कृषि के विकास के सन्दर्भ में सुझाव दिये गये हैं, जिससे मथुरा जनपद में तुलसी की कृषि का विकास हो सके।

सन्दर्भ

1. आर0सी0 तिवारी और बी0एन0 सिंह (2000) कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद
2. माजिद हुसैन कृषि भूगोल, विकास पब्लिकेशन नई दिल्ली 1986
3. श्री रामास्वामी एवं सिस्सी – द इण्डियन जनरल ऑफ फार्मेसी (मई 1967)
4. सांख्यिकी पत्रिका–2015
5. शरद कृषि अप्रैल 2014
6. Cances, 2011.